भारत सरकार

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 1482

02.08.2021 को उत्तर के लिए

राष्ट्रीय वनरोपण कार्यक्रम

1482. श्री मल्लिकार्जुन खरगे :

डा. अमी याज्ञिक :

क्या **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) वन-आच्छादन के बेहतर बनाने को लिए वर्ष 2014-15 से 2020-21 तक राष्ट्रीय वनरोपण कार्यक्रम पर किए गए बजटीय आवंटन और व्यय का वर्ष-वार ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या राष्ट्रीय वनरोपण कार्यक्रमों ने भारत में वन-आच्छादन को बेहतर बनाया है; और

(ग) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री
(श्री अश्विनी कुमार चौबे)

(क) राष्ट्रीय वनीकरण कार्यक्रम (एनएपी) पर वर्ष 2014-15 से 2020-21 तक वन-आच्छादन में सुधार हेतु बजटीय आवंटनों तथा व्यय का वर्ष-वार विवरण निम्नलिखित है :

(राशि करोड़ रुपए में)

वर्ष	**2014-15**	**2015-16**	**2016-17**	**2017-18**	**2018-19**	**2019-20**	**2020-21**
आवंटित बजट	243.78	100.00	60.00	80.00	176.94*	193.63*	160.00*
व्यय	243.78	94.16	59.35	80.00	176.73*	193.63*	158.04*

**हरित भारत मिशन - राष्ट्रीय वनीकरण कार्यक्रम के लिए संयुक्त आवंटन और व्यय। एनएपी के लिए अलग से कोई धनराशि निर्धारित नहीं की गई थी।*

(ख) और (ग) राष्ट्रीय वनीकरण कार्यक्रम (एनएपी) मंत्रालय की प्रमुख वनीकरण योजना रही है, जो जन सहभागिता और विकेन्द्रीकृत वन नियमन के साथ चिह्नित अवक्रमित वन क्षेत्रों में वनीकरण के लिए अखिल भारतीय आधार पर लागू की गई थी। अन्य वनीकरण योजनाओं के साथ एनएपी देश में अवक्रमित वन क्षेत्रों की पुन:बहाली में योगदान देता रहा है। इससे वन-आच्छादन के विस्तार में स्थिरीकरण और वृद्धि में सहायता मिली है, जो भारतीय वन सर्वेक्षण (एफएसआई) द्वारा प्रकाशित भारतीय राज्य वन स्थिति रिपोर्ट (आईएसएफआर) से स्पष्ट है। नवीनतम भारतीय राज्य वन स्थिति रिपोर्ट (आईएसएफआर 2019) में उल्लेख किया गया है कि आईएसएफआर-2015 में 7,94,245 वर्ग किमी. (24.16%) की तुलना में देश का कुल वन तथा वृक्षावरण 8,07,276 वर्ग किमी. (देश के भौगोलिक क्षेत्र का 24.56%) है। यह देश के वन और वृक्षावरण में 13,031 वर्ग किमी. की वृद्धि है। आईएसएफआर में यह भी इंगित किया गया कि सकारात्मक परिवर्तन संरक्षण उपायों अथवा प्रबंधन हस्तक्षेप जैसे कि वनीकरण गतिविधियों, वृक्षारोपण क्षेत्रों में बेहतर संरक्षण के लिए स्थानीय लोगों की सहभागिता के साथ परंपरागत वन क्षेत्रों, वनों के बाहर वृक्षों में वृद्धि, वृक्षारोपण अभियान आदि के कारण हो सकते हैं।

*****